संस्कृत-अनुवाद

क्या-क्या याद करना है —

तीनों पुरुषों के कर्त्ता के नौ रूप —

पुरुष ↓ व.→	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	सः (वह) He सा (वह) स्त्री० She तत् (वह) नपु० It	तौ, ते, ते } वे दोनों	ते, ताः, तानि } वे सब
मध्यम	त्वम् (तुम)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम सब)
उत्तम	अहं (मैं)	आवाम् (हम दोनों)	वयम् (हम सब)

सभी धातु रूप सभी लकारों में —

Note — सभी धातुएँ सभी लकारों में नौ रूपों में बनती हैं (तीनों पुरुषों, तीनों वचनों में)।

Ex. — पठ् धातु (लट् लकार) वर्तमान काल।

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम	पठति (पढ़ता है)	पठतः (पढ़ते हैं)	पठन्ति (पढ़ते हैं)
मध्यम	पठसि (पढ़ते हो)	पठथः (पढ़ते हो)	पठथ (पढ़ते हो)
उत्तम	पठामि (पढ़ता हूँ)	पठावः (पढ़ते हैं)	पठामः (पढ़ते हैं)

उपर्युक्त पर आधारित अभ्यास —

वह पढ़ता है। सः पठति	वे दोनों पढ़ते हैं। तौ पठतः	वे सब पढ़ते हैं। ते पठन्ति
तुम पढ़ते हो। त्वं पठसि	तुम दोनो पढ़ते हो। युवां पठथः	तुम सब पढ़ते हो। यूयं पठथ
मैं पढ़ता हूँ। अहं पठामि	हम दोनों पढ़ते हैं। आवां पठावः	हम सब पढ़ते हैं। वयं पठामः

पठ् (पढ़ना)

वर्तमान काल : लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

आज्ञा : लोट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

चाहिए : विधिलिङ्

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

भूतकाल : लङ् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

सामान्य भविष्यत् काल : लृट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

लोट् लकार (अभ्यास)
(आज्ञा के अर्थ में)

वह पढ़े। सः पठतु।	वे दोनो पढ़ें। तौ पठताम्।	वे सब पढ़ें। ते पठन्तु।
तुम पढ़ो। त्वं पठ।	तुम दोनो पढ़ो। युवां पठतम्।	तुम सब पढ़ो। यूयं पठत।
मैं पढ़ूं अहं पठानि	हम दोनों पढ़ें। आवां पठाव।	हम सब पढ़ें। वयं पठाम।

विधिलिङ् लकार (अभ्यास)
('चाहिए' के अर्थ में)

उसे पढ़ना चाहिए। सः पठेत् ।	उन दोनों को पढ़ना चाहिए। तौ पठेताम् ।	उन सब को पढ़ना चाहिए। ते पठेयुः ।
तुम्हे पढ़ना चाहिए। त्वं पठेः	तुम दोनों को पढ़ना चाहिए। युवां पठेतम्	तुम सब को पढ़ना चाहिए। यूयं पठेत ।
मुझे जाना चाहिए। अहं पठेयम्	हम दोनों को पढ़ना चाहिए। आवां पठेव	हम सबको पढ़ना चाहिए। वयं पठेम।

लङ् लकार (अभ्यास)
(भूत काल में प्रयोग)

उसने पढ़ा/पढ़ लिया सः अपठत्	उन दोनों ने पढ़ा। तौ अपठताम्	उन सब ने पढ़ा। ते अपठन्
तुमने पढ़ा/पढ़ लिया त्वं अपठः	तुम दोनों ने पढ़ा। युवां अपठतम्	तुम सबने पढ़ा/ यूयं अपठत
मैंने पढ़ा/पढ़ा था/ अहं अपठम्	हम दोनों ने पढ़ा था। आवां अपठाव	हम सब ने पढ़ा/पढ़ा था/ वयं अपठाम

लृट् लकार (अभ्यास)

(सामान्य भविष्यत् काल हेतु प्रयोग)

वह पढ़ेगा सः पाठिष्यति	वे दोनों पढ़ेंगे। तौ पठिष्यतः।	वे सब पढ़ेंगे। ते पाठिष्यन्ति।
तुम पढ़ोगे। त्वं पाठिष्यसि।	तुम दोनों पढ़ोगे। युवां पठिष्यथः।	तुम सब पढ़ोगे। यूयं पठिष्यथ।
मैं पढ़ूंगा। अहं पाठिष्यामि	हम दोनों पढ़ेंगे। आवां पठिष्यावः	हम सब पढ़ेंगे। वयं पठिष्यामः

Gyansindhu Coaching Classes
Hindi By Arunesh Sir

2. विभक्ति एवं कारक समझें —

विभक्ति	कारक	चिह्न
प्रथमा	कर्ता	ने
द्वितीया	कर्म	को
तृतीया	करण	से/के द्वारा
चतुर्थी	सम्प्रदान	के लिए
पंचमी	अपादान	से (अलग होना)
षष्ठी	सम्बन्ध	का की के, रा री रे
सप्तमी	अधिकरण	में, पे, पर ऊपर
सम्बोधन	सम्बोधन	हे ओ भो अरे ए आदि

शब्द रूप

[अकारान्त [पुल्लिङ्ग] 'राम']

वि०	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण्	रामाभ्याम	रामैः
चतुर्थी	रामाय	"	रामेभ्यः
पंञ्चमी	रामात्	"	"
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामाः!

Gyansindhu Coaching Classes

प्रथम पुरुष के नियम

नियम — 1.

(i) जब वाक्य में दो कर्ता च से जुड़े हों तो क्रिया – द्विवचन।

(ii) जब दो से अधिक कर्ता च से जुड़े हों तो क्रिया – बहुवचन।

Ex. राम और कृष्ण पढ़ते हैं।
रामः कृष्णश्च पठतः।

राम, कृष्ण और मोहन जाते हैं।
रामः कृष्णः मोहनश्च गच्छन्ति।

(iii) जब दो कर्ता या/अथवा (वा) से जुड़े हों तो क्रिया – एकवचन।

(iv) जब दो से अधिक कर्ता या/अथवा (वा) से जुड़े हों तो क्रिया – एकवचन।

Ex. राम अथवा मोहन जाता है।
रामः मोहनः वा गच्छति।

राम या कृष्ण या मोहन जाता है।
रामः कृष्णः मोहनः वा गच्छति।

Note — संस्कृत में या/अथवा की संस्कृत बाद में लिखी जाती है।

मध्यम पु० के नियम

मध्यम पुरुष का कर्ता, प्रथम पुरुष कर्ता के साथ च (और) से जुड़ा हो तो क्रिया मध्यमपुरुष द्विवचनान्त होगी। कई कर्ता हों तो म०पु० बहुवचनान्त होगी।

Ex. — तुम और राम जाते हो। / तुम राम और हरि जाते हो।
त्वं रामश्च गच्छथः। / त्वं रामः हरिश्च गच्छथ

नियम - 2

यदि कई कर्ता में 'वा' अथवा 'या' जुड़े हों तो क्रिया अपने सबसे निकट (पास) के कर्ता के पुरुष तथा वचन के अनुसार होती है।

Ex. तुम राम या हरि जाते हो।
त्वं रामः हरिः वा गच्छति।
तुम दोनों राम या वे जाते हैं।
युवां रामः वा ते गच्छन्ति।

उत्तम पुरुष के नियम

(i) यदि वाक्य में कर्ता दो से अधिक हों और च से जुड़े हों तथा वे प्रथम पु०, म०पु०, उ०पु० के हों तो क्रिया हमेशा उत्तम पु० बहु० की होती है।

Ex - तुम, मैं और राम पढ़ते हैं।
त्वम् अहं रामश्च पठामः।

(ii) यदि वाक्य में 'च' से जुड़े उ०पु० और म०पु० के दो ही कर्ता हों तो क्रिया हमेशा उत्तम पु० द्विवचन की होगी।

Ex - तुम और मैं पढ़ता हूँ।
त्वम् अहम् च पठावः।

लङ् लकार — पूर्व की भाँति क्रिया (धातु) के नियम रहेंगे।

→ कभी-कभी जब रहा था, रहे थे, प्रयुक्त होता है तब हम वाक्य में क्रिया के अन्त में 'स्म' जोड़कर वाक्य पूर्ण करते हैं। क्रिया वर्तमान (लट्) काल में होगी।

Ex - वह पढ़ रहा था
सः पठति स्म।

लोट् लकार के नियम — सभी पु० में

यह — आज्ञा, इच्छा, प्रार्थना, अनुमति, आशीर्वाद आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है।

(I) प्रथम पुरुष में इस लकार का प्रयोग — इच्छा, प्रार्थना अर्थ में होता है।
(II) म० पु० — " " — आज्ञा, आशीर्वाद " "
(III) उ० पु० — " " — इच्छा और प्रश्न " "

Ex — (i) सः लिखतु। — वह लिखे।
(ii) त्वं पठ। — तुम पढ़ो।
(iii) अहं गच्छानि। — मैं जाऊँ।

Gyansindhu Coaching Classes
By Arunesh Sir

विधिलिङ् लकार — के नियम

यह — 'चाहिए' (विधिवाक्य) में प्रयोग होता है।
इच्छा प्रकट करना, अनुमति, प्रार्थना
सम्भावना, सामर्थ्य प्रकट करना।

Ex — लड़के को पढ़ना चाहिए / लड़का पढ़े।
बालक: पठेत्।
छात्र वहाँ पढ़े / छात्र को वहाँ पढ़ना चाहिए।
छात्र: तत्र पठेत्।